रगंहीन द्रव

श्रीमति रूकसाना बेगम
प्र.अ., रा.प्रा.वि. नं.–19
रूड़की

रंगहीन कैसा ये द्रव है,
इसके बिना जीना मुश्किल है।

इसको पीकर पशु–पक्षी,
मनुष्य भी होते है तृप्त।

इसको बचाओंगे तो भविष्य होगा सुरक्षित,
ऐसा न हो धरा सूख जाए।

ढूंढकर भी जब मिल नहीं पाए,
स्वच्छ जल एक अनमोल है मोती।

मत करो इसकी कद्र को छोटी,
स्वच्छ जल एक अनमोल है मोती।।